दो भाई थे। बड़े की शादी हो गई थी। उसके दो बच्चे भी थे। छोटा कुँआरा था। दोनों भाई साझा खेती करते थे। एक बार उनके खेत में गेहूँ की फसल पककर तैयार हो गई थी। दोनों ने मिलकर फसल काटी और गेहूँ तैयार किया। इसके बाद दोनों ने आधा-आधा गेहूँ बाँट लिया। अब गेहूँ ढोकर घर ले जाना बचा था।

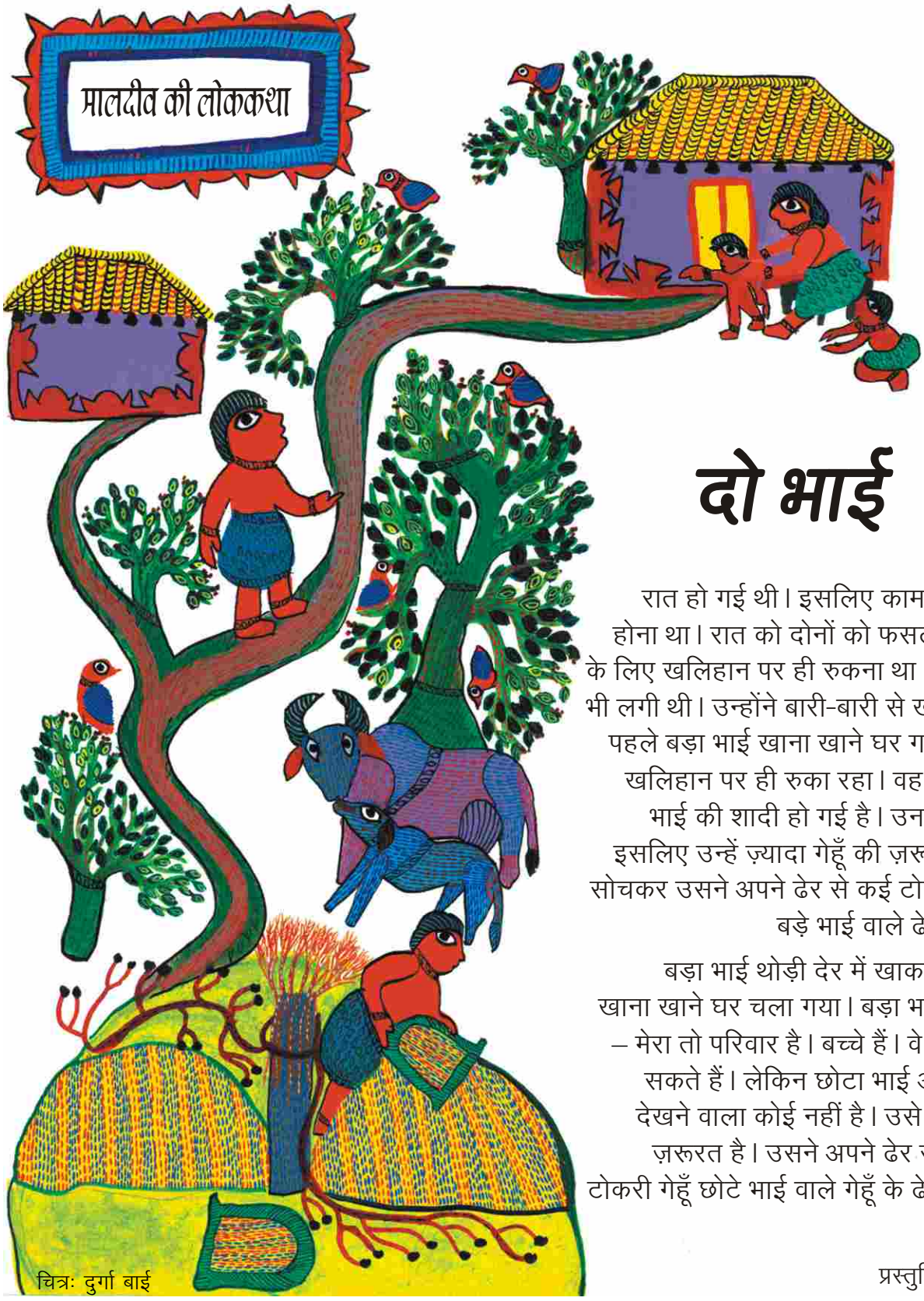

चित्रः दुर्गा बाई

दो भाई

रात हो गई थी। इसलिए काम अगले दिन ही होना था। रात को दोनों को फसल की रखवाली के लिए खलिहान पर ही रुकना था। दोनों को भूख भी लगी थी। उन्होंने बारी-बारी से खाने का सोचा। पहले बड़ा भाई खाना खाने घर गया। छोटा भाई खलिहान पर ही रुका रहा। वह सोचने लगा – भाई की शादी हो गई है। उनका परिवार है। इसलिए उन्हें ज़्यादा गेहूँ की ज़रूरत होगी। यह सोचकर उसने अपने ढेर से कई टोकरी गेहूँ लेकर बड़े भाई वाले ढेर में मिला दी।

बड़ा भाई थोड़ी देर में खाकर लौटा। छोटा खाना खाने घर चला गया। बड़ा भाई सोचने लगा – मेरा तो परिवार है। बच्चे हैं। वे मेरा ध्यान रख सकते हैं। लेकिन छोटा भाई अकेला है। उसे देखने वाला कोई नहीं है। उसे ज़्यादा गेहूँ की ज़रूरत है। उसने अपने ढेर से उठाकर कई टोकरी गेहूँ छोटे भाई वाले गेहूँ के ढेर में मिला दी।

प्रस्तुतिः संजीव ठाकुर